खंड – घ

अर्थबोध (कविता)

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पद– सूरदास

(1)

ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति–नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

(क) गोपियों ने उद्धव को 'बड़भागी' क्यों कहा ?
(ख) कमल और जल का उदाहरण देकर गोपियाँ उद्धव जी से क्या कहना चाहती हैं ?
(ग) गोपियों ने अपने प्रेम की तुलना किससे की है और क्यों ?
(घ) यह किस काल की रचना है?
(ड.) यह पद किस भाषा में रचित है?

राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद– तुलसीदास

(2)

सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही।।
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सबु लागु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे।।
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु।।

(क) सारी सभा 'हाय! हाय!' क्यों पुकार उठी ?
(ख) 'द्विजदेवता घरहि के बाढ़े' –कहकर लक्ष्मण क्या कहना चाहते हैं ?
(ग) लक्ष्मण के उत्तर से परशुराम जी को क्या हुआ ?
(घ) रघुकुल के सूर्य किसे कहा गया और उन्होंने क्या किया ?
(ड.) राम ने लक्ष्मण को नेत्र संकेत से क्यों रोका?

(3) सवैया– देव

पॉयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।
सॉवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हॅसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई।।

(क) प्रस्तुत सवैया किसके द्वारा रचित है ?
(ख) कवि ने 'श्रीब्रजदूलह' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है ?
(ग) सवैये आधार पर बाल कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
(घ) किसे संसार रूपी मंदिर का दीपक कहा गया है तथा क्यों ?

(4) आत्मकथ्य– जयशंकर प्रसाद

मधुप गुन–गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझााकर गिर रहीं पत्तियॉ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत–नीलिमा में असंख्य जीवन–इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य–मलिन उपहास
तब भी कहते हो–कह डालूॅ दुर्बलता अपनी बीती
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे–यह गागर रीति।

(क) कवि किसके माध्यम से अपनी जीवन–कथा कह रहा है ?
(ख) कवि ने जीवन की तुलना पतझड़ से क्यों की है ?
(ग) प्रस्तुत काव्यांश में मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया गया है ?
(घ) 'गागर रीती' से क्या तात्पर्य है ? कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

(5) उत्साह, अट नहीं रही है– निराला

बादल, गरजो!–
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुॅघराले,
बाल कल्पना के–से पाले,
विद्युत–छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो–
बादल, गरजो!

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए।

(ख) कवि किसका आह्वान कर रहा है और क्यों ?
(ग) आकाश में फैले हुए बादल कैसे लग रहे हैं ?
(घ) 'विद्युत–छबि उर में'–भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(6) यह दंतुरित मुसकान, फ़सल– नागार्जुन

फ़सल क्या है ?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी–काली–संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

(क) फ़सल उपजाने के लिए आवश्यक तत्व कौन–कौन से हैं ?
(ख) 'नदियों के पानी का जादू' क्यों कहा गया है ?
(ग) मिट्टी की विशेषता को प्रकट करने के लिए कौन–कौन से विशेषण लिए गए है तथा क्यों ?
(घ) फसल के उगने में मनुष्य के हाथों की क्या महिमा है?
(ङ.) 'रूपांतर है सूरज की किरणों का' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(7) छाया मत छूना– गिरिजा कुमार माथुर

दुविधा–हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चॉद खिला शरद–रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस–बसंत जाने पर ?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,

(क) 'दुविधा–हत साहस है' –से क्या तात्पर्य है ?
(ख) वसंत बीत जाने के बाद यदि फूल खिलता है तो मनुष्य को क्या करना चाहिए?
(ग) मनुष्य अपने सुखद भविष्य का चयन कैसे कर सकता है ?
(घ) व्यक्ति को रास्ता क्यों नहीं दिखाई देता?
(ङ.) कवि क्या भूलने की बात कहता है?

(8) कन्यादान–ऋतुराज

मॉ ने कहा पानी में झॉककर
अपने चेहरे पर मत रीझना

आग रोटियॉ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
मॉ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(क) मॉ ने बेटी से क्या कहा ?
(ख) वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह स्त्री–जीवन के बंधन क्यों माने गए ?
(ग) मॉ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना ?
(घ) आग के बारे में मॉ क्या बताती है?

(9) संगतकार– मंगलेश डबराल

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गाायक को ढ़ॉढस बॅधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी–कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो काशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

(क) कवि तथा कविता का नाम बताइए।
(ख) संगतकार किस प्रकार मुख्य गायक–गायिकाओं की मदद करते हैं ?
(ग) संगतकार के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं और क्यों ?
(घ) छंद की दृष्टि से यह कविता कैसी है?

विषय वस्तु (कविता)

1. पद

1. 'उधौ तुम हौ अति बड़भागी' में किन लोगों पर व्यंग्य है? सूर का इसके द्वारा क्या संदेश है?
2. सूरदास प्रेम भक्ति के समर्थक थे – सिद्ध कीजिए।

3. सूर के पदों में किन विचारधाराओं में संघर्ष दिखाई देता है? कैसे?
4. क्या वास्तव में गोपियॉ उद्धव को भाग्यशाली मानती है ? पहले पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
5. योग साधना को व्याधि क्यों कहा गया है ?
6. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं ? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नजर आता है ?–स्पष्ट कीजिए।
7. 'तै क्यों अनीति करैं आपुन जे और अनीति छुड़ाए' का आशय स्पष्ट कीजिए।
8. गोपियों ने अपने वाक्–चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्– चातुर्य की विशेषताऍ लिखिए।

2. राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद

1. प्रस्तुत कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है?
2. परशुराम के फरसु की क्या विशेषता है?
3. लक्ष्मण अपने कुल की कौन सी परम्परा पर गर्व करता है?
4. इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
5. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा, उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।
6. क्रोध का शमन किस प्रकार संभव है ? राम चरित्र के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
7. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

3. सवैया, कवित्त–1,2

1. देव के सवैयों से कैसी संतुष्टि मिलती है?
2. देव की कवित्तों का क्या मूल्य है?
3. देव दरबारी कवि थे – उदाहरण दीजिए।
4. आप अपने घर की छत से पूर्णिमा की रात दिखिए, तथा उसके सौंदर्य को अपनी कलम से शब्दबद्ध कीजिए।
5. 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण ऋतुओं में क्या परिवर्तन आ रहे हैं ? इस समस्या से निबटने के लिए आपकी क्या भूमिका हो सकती है ?

4. आत्मकथ्य

1. 'आत्मकथ्य' के आधार पर 'प्रसाद' जी की जीवन–यात्रा के बारे में बताइए।
2. 'आत्मकथ्य' में कवि क्या कहना चाहता है?

3. कोई भी अपनी आत्मकथा लिख सकता है। उसके लिए विशिष्ट या बड़ा होना जरूरी नहीं है। उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।
4. हमें आत्म–प्रवंचना, झूठे आडंबरों से बचना चाहिए। कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

5. उत्साह

1. 'उत्साह' कविता का उद्देश्य व संदेश स्पष्ट करें।
2. कवि ने बादलों को 'अनंतधन' क्यों कहा है ?
3. 'उत्साह' कविता में बादल के माध्यम से नई कविता की ओर क्या संकेत किया गया है ?

अट नहीं रही है

1. 'अट नहीं रही है' में फागुन मास की शोभा का वर्णन कीजिए।
2. होली के आस–पास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए।
3. कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रकृति का सान्निध्य मनुष्य को अवसाद मुक्त कर सक्रिय बनाता है।
4. वसंत ऋतु का नैसर्गिक सौंदर्य मनुष्य की संवेदनशीलता को प्रभावित करता है। पठित कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

6. यह दंतुरित मुसकान,

1. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?
2. शिशु कब अनिमेष देखने लगता है? उसकी मनःस्थिति का वर्णन करें।
3. मिट्टी के गुणधर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे?
4. वर्तमान जीवन शैली मिट्टी के गुणधर्म को किस–किस तरह प्रभावित करती है?
5. 'दंतुरित मुसकान' से बच्चे की उम्र का अनुमान लगाइए और तर्क सहित उत्तर दीजिए।
6. कविता में कवि स्वयं को प्रवासी, इतर और अतिथि क्यों कहता है ?
7. नन्हें शिशु की मुसकान पत्थर हृदय को भी पिघलाकर पानी बना सकती है। स्पष्ट कीजिए।
8. वर्तमान जीवन शैली मिट्टी के गुण–धर्म को किस–किस तरह प्रभावित करती है?

7. छाया मत छूना

1. 'छाया मत छूना' कविता का मूल संदेश क्या है? स्पष्ट करें।
2. कवि गिरिजाकुमार को वैभव और यश क्यों अस्वीकार्य है?
3. 'दुविधा हत साहस है दिखता है पंथ नहीं' का भावार्थ क्या है?
4. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं तथा कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ?
5. 'विगत के सुखों की कल्पना से चिपके रहने का क्या परिणाम होता है ?

6. मनुष्य दुविधग्रस्त कब हो जाता है तथा उसका क्या बुरा परिणाम उसे भोगना पड़ता है ?

8. कन्यादान

1. 'कन्यादान' कविता का यंदेश स्पष्ट करें।
2. नारी जीवन के सुख और दुख क्या हैं?
3. आपकी दृष्टि में कन्या के साथ 'दान' की बात करना कहॉ तक उचित है ?'
4. वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों की स्थिति क्या है ? अपने विचार लिखिए।
5. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की'–के द्वारा कवि कन्या की किन चारित्रिक विशेषताओं को बताना चाहता है ?
6. कवि ने समाज में नारी से जुड़ी किन समस्याओं को उठााया है, 'कन्यादान' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

9. संगतकार

1. संगतकार कविता का मूल उद्देश्य या संदेश क्या है?
2. संगतकार की प्रतीकात्मकता को समझाइए।
3. किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर क्यों नहीं पहॅुच पाते होंगे ?
4. आप अपने जीवन में मुख्य गायक अथवा कलाकार की भूमिका निभाना चाहेंगे या संगतकार की ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

सराहना संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काब्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) **पद**

हरि हैं रानीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचर सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलें ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग–सॅदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपने मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तो यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

(क) प्रस्तुत पद किस भाषा में रचा गया है ?
(ख) 'मधुकर' कहकर किसे संबोधित किया गया है ?

(ग) अनुप्रास अलंकार छाँटकर लिखिए।
(घ) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए ?
(ङ) 'हरि राजनीति जान गए हैं–गोपियाँ ऐसा क्यों कहती है ?

(2) राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद

सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही ।।
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे।।

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु।।

(क) प्रस्तुत पद कहाँ से उद्घृत है ?
(ख) 'जल सम बचन बोले रघुकुलभानु'–कौन–से दो अलंकार है ?
(ग) अंतिम दो पंक्तियों में कौन–सा छंद है ?
(घ) काव्यांश की भाषा बताइए।
(ङ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार तथा अनुप्रास अलंकार का उदाहरण काव्यांश में से छाँटकर लिखिए

(3) कवित्त

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावे, केकी–कीर बतरावें 'देव',
कोकिल हलावे–हुलसावे कर तारी दे।।
पुरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

(क) यह किस काल की रचना है ?
(ख) काव्यांश में किस ऋतु का चित्रण है तथा किस रूप में ?
(ग) छंद का नाम लिखिए।
(घ) दो भिन्न अलंकार बताइए।

(4) आत्मकथ्य

छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म–कथा ?

अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(क) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौन–सी है और कैसी है ?
(ख) प्रस्तुत गीत किस प्रकार का है ?
(ग) काव्यांश के आधार पर काव्यगत विशेषता बताइए ?
(घ) अनुप्रास अलंकार छॉटकर लिखिए ?
(ङ) यह काव्यांश किस शैली में रचित है ?

(5) उत्साह

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनुत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
    शीतल कर दो–
    बादल, गरजा!

(क) काव्यांश किस भाषा में रचा गया है ?
(ख) तत्सम श्ब्द छॉटकर लिखिए।
(ग) काव्यांश किस शैली में रचितत है ?
(घ) यह गीत किस प्रकार का है ?
(ङ) एक काव्य–पंक्ति छॉटकर उसमें निहित अलंकार का नाम भी लिखिए।

(6) अट नहीं रही है

कहीं सॉस लेते हो,
घर–घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर–पर कर देते हो,
ऑख हटाता हूॅ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद–गंध–पुष्प–माल,
पाट–पाट शोभा–श्री
पर नहीं रही है।

(क) प्रस्तुत काव्यांश में किस पर्व का चित्रण किया गया है ?
(ख) काव्यांश में किस भाषा का प्रयोग हुआ है ?
(ग) काव्यांश में प्रयुक्त भाषा की विशेषता बताइए ?
(घ) अलंकार छॉटकर लिखिए।

(ङ) काव्यांश की काव्यगत विशेषता बताइए।

(7) यह दंतुरित मुस्कान

तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि–धूसर तुम्हारे ये गात........
छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण

(क) प्रस्तुत काव्यांश किस कवि द्वारा रचित है ?
(ख) काव्यांश में किन भावनाओं का चित्रण हुआ है ?
(ग) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौन–सी है ?
(घ) 'धूलि–धूसर' में कौन–सा अलंकार है ?
(ङ) चौथी पंक्ति में कौन–सा अलंकार है ?

(8) छाया मत छूना

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण–बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–
छया मत छुना
मन होगा दुख दूना।।

(क) 'मृगतृष्णा' का प्रयोग काव्यांश में किस अर्थ में हुआ है ?
(ख) 'छाया' किसका प्रतीक है ?
(ग) काव्यांश की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?
(घ) तत्सम शब्द चुनकर लिखिए।
(ङ) 'प्रभुता का शरण–बिंब केवल मृगतृष्णा' पंक्ति के मााध्यम से क्या विशेष बात की गई है ?

(9) संगतकार

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर कॉपती हुई थी
वह मुख्य नायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार

मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लॉघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
जब संगतकार ही स्थायी को सॅभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

(क) प्रस्तुत काव्य–पंक्तियों में किसकी भूमिका के महत्व पर प्रकाश डाला गया है ?
(ख) कविता हम पर क्या प्रभाव डालती है ?
(ग) काव्यांश में कौन–सा भाव तथा रस है ?
(घ) कविता कौन–से काल की है ?
(ङ) 'नई कविता' धारा की विशेषता क्या है ?

अर्थबोध (गद्य)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(1) नेताजी का चश्मा

सोचा, आज वहॉ रूकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाऍगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाऍगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रूकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर ऑखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गई। कुछ ऐसा देखा कि चीखे रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रूकते–न–रूकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज–तेज कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

मूर्ति की ऑखों पर सरकंडे से बना छोटा–सा चश्मा रखा हुआ था, जैसे बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी–सी बात पर उनकी ऑखें भर आई।

(क) प्रस्तुत गद्यांश में किसकी बात की जा रही है ?
(ख) हालदार साहब मूर्ति की तरफ क्यों नहीं देखना चाहते थे।
(ग) हालदार साहब ने ऐसा क्या देखा जो चीख पड़े ?
(घ) हालदार साहब इतनी–सी बात पर भावुक क्यों हो उठे।

(2) बालगोबिन भगत

बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं! हौं, गाते–गाते कभी–कभी पतोहू के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा–परमात्मा के पास चली गई, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ? मैं कभी–कभी साोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किंतु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे, उसमें उनका विश्वास बोल रहा था–वह चरम विश्वास, जो हमेंशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

(क) पतोहू क्यों रो रही थी ?
(ख) भगत जी उसे उत्सव मनाने की क्यों कहते हैं ?
(ग) लेखक भगत जी के बारे में क्या सोचते हैं ?
(घ) लेखक को भगत जी की बातों पर विश्वास क्यों हुआ ?

(3) लखनवी अंदाज

हम गौर कर रहे थे, खीरा इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सुक्ष्म, नफीस या एब्स्ट्रेक्ट तरीका जरूर कहा जा सकता है, परंतु क्या ऐसे तरीके से उदर की तृप्ति भी हो सकती है ?

नवाब साहब की ओर से भरे पेट के ऊँचे डकार का शब्द सुनाई दिया और नवाब साहब ने हमारी ओर देखकर कह दिया, 'खीरा लजीज होता है लेकिन होता है सकील, नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है।'

ज्ञान–चक्षु खुल गए! पहचाना–ये हैं नई कहानी के लेखक!

(क) लेखक ने किस तरीके को शिष्टता और कोमलता का तरीका कहा है और क्यों?
(ख) खीरे की विशेषता, तथा उससे होने वाली परेशानी का उल्लेख कीजिए ?
(ग) 'ज्ञान–चक्षु खुल गए'–लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?

(4) मानवीय करुणा की दिव्य चमक

1. फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं, जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बॅधे जैसे थे, जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हॅसी–मजाक में वह निर्लिपत शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते।

(क) फादर को देखकर तथा बातचीत कर लेखक को क्या अनुभव होता था ?

(ख) लेखक को 'परिमल' के दिन क्यों याद आते थे ?
(ग) फादर बुल्के को बड़े भाई और पुरोहित के समान क्यों कहा गया ?

2. फादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी–कभी लगता है वह मन से संन्यासी नहीं थे। रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते, जरूर मिलते खोजकर, समय निकाल कर, गरमी, सरदी, बरसात झेलकर मिलने के बाद, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन संन्यासी करता है।

(क) लेखक ने यह क्यों कहा कि फादर मन से संन्यासी नहीं थे?
(ख) फादर बुल्के को संकल्प संन्यासी कहकर लेखक उनकी किस विशेशता को उजागर कर रहे हैं?
(ग) कैसे पता चलता है कि फादर बुल्के और लेखक में घनिष्ठ लगाव था?

(5) एक कहानी यह भी

होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी–न–किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं.....कहीं कुँठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप मे। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है! समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए......स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता!

(क) लेखिका की अपने पिता से टक्कर क्यों होती थी ?
(ख) हमें किस बात का अहसास नहीं होता ?
(ग) हम किससे मुक्त नहीं हो पाते और क्यों ?

(6) स्त्री–शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

1. इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है। न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करतीं। यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है। समझे। स्त्रयों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूंट! ऐसी ही दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ना चाहते हैं।

(क) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस प्रकार के लोगों पर व्यंग्य किया है ?
(ख) जो व्यक्ति स्त्री–शिक्षा के विरोधी हैं, वे क्या तर्क तथा उदाहरण देते हैं ?

(ग) स्त्रियों को अंशिक्षित रख कर क्या भारत का गौरव बढ़ा सकते हैं ?तर्क सहित उत्तर दीजिए।

2. नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकतीं थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गॅवार होने का। वाल्मीकी रामायण के तो बंदर तक संस्कृत बोलते थे। बंदर संस्कृत बोल सकते थे, स्त्रियॉ न बोल सकती थीं। अच्छा तो उत्तर रामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियॉ कौन सी भाषा बोलती थीं? उनकी संरृत क्या कोई गॅवार संस्कृत थी?

(क) लेखक नाटकों में स्त्रियों के प्राकृत बोलने पर क्या सफाई देते हैं?
(ख) लंखक वाल्मीकी रामायण का उदाहरण देकर क्या सिद्ध करना चाहते हैं?
(ग) प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ क्यों नहीं कहा जा सकता?

(7) नौबतखाने में इबादत

1. शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खॉ साहब अस्सी बरस से सुर मॉग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पॉचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे, इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते हैं–'मेरे मालिक, एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि ऑखों से सच्चे मोती की तरह अनपढ़ ऑसू निकल आऍ। उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उनपर मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकालकर उनकी ओर उछालेगा, फिर कहेगा, ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी।

(क) बिस्मिल्ला खॉ ने ईश्वर से सदा क्या मॉगा ?
(ख) उन्हें क्या विश्वास था ?
(ग) प्रस्तुत अवतरण के आधार पर खॉ साहब की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

2. इस दिन खॉ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते हैं व दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौहा बजाते जाते हैं। इस दिन कोई राग नहीं बजता। राग–रागिनियों की अदायगी का निषेध है इस दिन।

उनकी ऑखें इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में नम रहती हैं। अजादारी होती है। हजारों ऑखें नम। हजार बरस की परंपरा पुनर्जीवित। मुहर्रम संपन्न होता है। एक बड़े कलाकार का सहज मानवीय रूप ऐसे अवसर पर आसानी से दिख जाता है।

(क) किस दिन खॉ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते थे ?
(ख) इस दिन राग–रागिनियॉ क्यों नहीं बजाई जातीं ?
(ग) एक बड़े कलाकार का कौन–सा रूप प्रकट होता है?

(8) संस्कृति

हमारी समझ में मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई–धागे का अवष्कार कराती है, वह भी संस्कृति है, जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है? वह भी है और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है, वह भी संस्कृति है।

और सभ्यता ? है–संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने–पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके, हमारे गमना–गमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म–विनाश के साधनों का अविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ? और जिन साधनों के बल पर वह दिन–रात आत्म–विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा ?

(क) किसे–किसे संस्कृति कहा जा सकता है ?
(ख) सभ्यता किसे कहा गया ?
(ग) मानव की जो योग्यता उससे आत्म–विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहेंगे या असंस्कृति ?

विषय वस्तु, विचार / संदेश (गद्य)

1. नेताजी का चश्मा

1. लेखक ने कस्बे का वर्णन किस प्रकार किया है?
2. कैप्टन मूर्ति पर बार–बार चश्मा क्यों लगा देता था?
3. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?
4. हालदार साहब चश्में वाले की देशभक्ति के प्रति क्यों नतमस्तक थे?
5. नेताजी की मूर्ति को देखकर क्या याद आने लगता था?
6. हम सभी कैसे अपने दैनिक कार्यों से किसी–न किसी रूप में अपने देश–प्रेम को प्रकट कर सकते हैं ?
7. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था, तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन–सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।
8 नेता जी की मूर्ति को चश्में के बगैर देखकर लेखक को बुरा क्यों लगा ?

2. बालगोबिन भगत

1. बालगोबिन भगत किसके पद गाते थे और क्यों?
2. बालगोबिन भगत की पुत्रवधू कैसी थी?
3. कार्तिक मास से फाल्गुन मास तक बालगोबिन भगत सुबह के समय में क्या करते थे?
4. आषाढ़ में बालगोबिन भगत के संगीत का जादू सबपर क्या–क्या प्रभाव डालता था ? चित्रण कीजिए।
5. मोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन को सच सिद्‌ध करेंगे ?
6. इस पाठ में जो ग्राम्य संस्कृति की झलक मिलती है, उसका उल्लेख कीजिए।

3. लखनवी अंदाज

1. लेखक सेकण्ड क्लास के डिब्बे में यात्रा क्यों कर रहा था?
2. लेखक ने नवाब की असुविधा और संकोच के लिए क्या अनुमान लगाया?
3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से आप कहॉं तक सहमत हैं?
4. लेखक ने लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वालों की किस विशेषता को प्रकट किया ?
5. खीरा खाने से इंकार करने पर लेखक को अफसोस क्यों हो रहा था ?
6. 'लखनवी अंदाज' कहानी के माध्यम से लेखक ने किस वर्ग की प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया है ?

4. मानवीय करुणा की दिव्य चमक

1. आपके विचार से बुल्के ने भारत आने का मन क्यों बनाया होगा?
2. फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है। कैसे?
3. फादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है?
4. फादर बुल्के एक संन्यासी थे, परंतु पारंपरिक अर्थ में हम उन्हें संन्यासी क्यों नहीं कह सकते ?
5. फादर का हिन्दी के प्रति किस प्रकार का लगाव था तथा उन्होंने हिंदी की सेवा के लिए क्या कार्य किए ?
6. लेखक ने फादर बुल्के को 'यज्ञ की पवित्र आग' क्यों कहा है ?
7. फादर बुल्के की मृत्यु के समय लोगों का मन दुखों से भरा था, उन्होंने अपनी श्रद्‌धांजलि किस प्रकार दी ? उदाहरण दीजिए।

5. एक कहानी यह भी

1. शीला अग्रवाल का लेखिका के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?
2. किन कारणों से लेखिका के मन में हीन भावना पैदा हो गई थी?
3. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आन्दोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।
4. मॉ में इतनी विशेषताएँ होते हुए भी लेखिका अपनी मॉ को अपना आदर्श क्यों नहीं बना सकी ?
5. वह कौन–सी घटना थी, जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी ऑखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर ?
6. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

6. स्त्री–शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

1. प्राचीनकाल में पांडित्य में परिपूर्ण किन स्त्रियों का उल्लेख लेखक ने किया है?
2. तब की शिक्षा प्रणाली और अब की शिक्षा प्रणाली में क्या अंतर है?
3. 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं'–कुतर्कवादियों की इस दलील का खंडन द्विवेदी जी ने कैसे किया है? अपने शब्दों में लिखिए।
4. किन–किन दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखना चाहते हैं ?
5. तब की शिक्षा प्रणाली और अब की शिक्षा प्रणाली में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए।
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी का निबंध उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है–कैसे ?
7. शिक्षा प्रणाली में संशोधन करते समय किन बातों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक होगा ?

7. नौबतखाने में इबादत

1. 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।'–आशय स्पष्ट कीजिए।
2. बिस्मिल्ला खॉ मिली–जुली संस्कृति के प्रतीक थे। सिद्ध कीजिए।
3. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि 'वे वास्तविक अर्थों में सच्चे इन्सान थें'।
4. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खॉ मिली–जुली संस्कृति के प्रतीक थे ?
5. बिस्मिल्ला खॉ कला के अनन्य उपासक थे, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

8. संस्कृति

1. आग की खोज एक बहुत बडी खोज क्यो मानी जाती हैं? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत क्या रहे होंगें ?
2. न्यूटन को सस्कृंत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिये गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नही कहला सकते क्यो ?
3. संस्कृति कब असंस्कृति में बदल जाती हैं ?
4. भौतिक प्रेरणा और ज्ञानेप्सा क्या ये ही दो मानव संस्कृति के माता–पिता है ?
5. संस्कृत व्यक्ति की संतान के संबंध में लेखक का क्या विचार है?
6. मानव की जो योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है। हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?
7. किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई–धागे का आविष्कार हुआ होगा?

कृतिका (निबंधात्मक एवं लघु उत्तरात्मक)

1. माता का ऑंचल

1. 'माता का ऑंचल' पढ़ते समय आपको भी अपने माता–पिता का लाड़–प्यार याद आ रहा होगा– अपनी इन भावनाओं को लिखिए।
2. 'माता का ऑंचल' में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस प्रकार भिन्न है?
3. बाबूजी भोलानाथ को खाना खिलाते थे, फिर भी मॉ को संतुष्टि क्यों नही थी?
4. तिवारी जी ने बैजू और भोलानाथ को गुरुजी से क्यों पिटवाया?
5. विपदा के समय बच्चा पिता के पास न जाकर मॉ के पास ही क्यों जाता है? अपनी राय के अनुसार लिखिए।

2. जार्ज पंचम की नाक

1. नाक मान–सम्मान व प्रतियठा का द्योतक है। यह बात पूरी तरह व्यंग्य रचना में किस तरह उभर कर आई है? लिखिए।
2. जार्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?
3. 'नई दिल्ली में सब था.............सिर्फ नाक नहीं थी'। इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता था।
4. बच्चों की नाक भी जार्ज पंचम की नाक से बड़ी थी– लेखक ने ऐसा क्यों कहा?
5. इस व्यंग्य में औपनिवेशिक दौर की मानसिकता और विदेशी आकर्षण पर गहरी चोट की गई है, कैसे?
6. नाक किस बात का द्योतक है? जॉर्ज पंचम की लाट पर नाक लगवाने के माध्यम से लेखक क्या कहना चाह रहा है?

3. साना–साना हाथ जोड़ि

1. प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती होती है?
2. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग–अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?
3. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह खिलवाड़ किया जा रहा है?इसे किस प्रकार रोका जा सकता है?
4. सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन–किन लोगों का योगदान होता है?
5. हिमशिखरों को जल–स्तंभ क्यों कहा गया है? 'साना–साना हाथ जोड़ि'– पाठ के आधार पर बताइए।
6. औरतों को मेहनत करते देख लेखिका के मन में उनके प्रति कैसे–कैसे भाव उत्पन्न हुए?
7. 'कटाओ' क्या है? इसके बारे में जानकारी दीजिए।
8. घुमक्कड़ी हमें 'स्व' की संकीर्णता से कैसे मुक्त करती है? पाठ के आधार पर बताइए।

4. एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा

1. भारत के स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार दिया?
2. एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! का प्रतीकार्थ समझाइए।
3. दुलारी और टुन्नू के प्रेम के पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी, यह प्रेम दुलारी के देश–प्रेम तक कैसे पहुँचता है?
4. हमारी आजादी की लड़ाई में समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान भी कम नहीं रहा है। इस कहानी में ऐसे लोगों के योगदान को लेखक ने किस प्रकार उभारा है?
5. कजली दंगल जैसी गतिविधियों का आयोजन क्यों हुआ करता होगा? कुछ और परम्परागत लोक आयोजनों का उल्लेख कीजिए।
6. संपादक ने यह क्यों कहा कि शर्मा द्वारा लिखी रिपोर्ट सच है, पर छप नहीं सकती?

5. मैं क्यों लिखता हूँ

1. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?
2. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के लेखक के अनुसार अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर है?
3. भीतरी विवशता क्या होती है? लेखक ने इसे स्पष्ट करने के लिए किसकी चर्चा की?

4. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?
5. हिरोशिमा में लेखक ने प्रत्यक्ष सब कुछ देखा, फिर भी लेखक कुछ नहीं लिख पाए, क्यों?
6. किस घटना ने लेखक के अंतमग्न को झकझोर कविता लिखने के लिए विवश किया?
7. कृतिकार हमेशा क्या भेद बनाए रखता है?